सीटी बजाने का खेल और मुलायम

मुलायम सिंह पर लड़कपन हावी हो रहा है। जनता दल अध्यक्ष शरद यादव ने जिन्हें 'परकटी' महिलायें कहा है, उन्हें देख कर सीटी बजाने की इच्छा उन्हें हो रही है, पर इस ढलती उम्र में वे क्या सीटी बजायेंगे, इसलिए उन्होंने इस काम को लड़कों पर छोड़ दिया है। समाजवादी दल के युवा विंग के सदस्य उन महिलाओं को देख कर बेफिक्र हो कर सीटी बजा सकते हैं जो संसद सदस्य बनेंगी। पर वे महिलायें पैदल अथवा रिक्शे की सवारी तो करने से रहीं कि उन पर सीटी बजाई जा सके। वे तो कार से ही संसद आया-जाया करेंगी। कार में बैठी महिलाओं पर सीटी कैसे बजाई जा सकती है? मुलायम सिंह सीटी बजाने वाले अपने बयान पर टिके हुए हैं। वे संभवत: इस बात को भूल चुके हैं कि महिलाओं को देख कर सीटी बजाना छेड़छाड़ का मामला बनता है और इसके लिए भारतीय कानून में सजा का प्रावधान है। अब क्या यह अच्छा लगेगा कि मुलायम की पार्टी के युवा सदस्यों को महिलाओं के साथ छेड़छाड़ के आरोप में सजा दी जाये। सीटी बजाने वाली बात से यह भी लगता है कि अपने लड़कपन और चढ़ती जवानी के दिनों में मुलायम सिंह भी लड़कियों को देख कर सीटी बजाते होंगे, अन्यथा यह बात इनके दिमाग में कैसे आई? मुलायम सिंह के अतीत को जानने वाले यह अच्छी तरह जानते हैं कि जब वे युवा थे तो पहलवानी का शौक रखते थे और कुश्ती लड़ते थे। पहलवानों को ब्रह्मचर्य की पूर्ण दीक्षा दी जाती है। उससे यह अपेक्षा नहीं की जाती कि वह सड़कों पर आती-जाती लड़कियों को देख कर सीटी बजाये। इसलिए सीटी न बजाने की कुंठा उनके मन के किसी कोने में है। अच्छा है, वे इस कुंठा को दूर करने के लिए लोकसभा में जोर-जोर से सीटी बजायें। अभी भी वहां सुंदरियों की कमी नहीं है।

अमर सिंह का दिवा-स्वप्न

समाजवादी पार्टी से निष्कासित अमर सिंह अब अपने नाम के आगे ठाकुर लिखने लगे हैं। 'सफल' ठाकुर रैली भी निकाली है। यानी वह अपनी क्षत्रिय पहचान बनाने में लगे हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि इससे उन्हें राजनीतिक फायदा होगा। मुलायम का साथ छोड़ने के बाद अब बेचारे मीडिया से भी दूर हो गये हैं। मीडिया उनहें कोई भाव ही नहीं दे रहा है। अमर सिंह की कठिनाई यह है कि उनकी आवाज़ से क्षत्रियों का रौब नहीं टपकता। न ही उनकी गंड़ासा छाप मूंछे हैं। न ही ऐसे मुद्दे कि वे क्षत्रियों की भावनाओं को भड़का सकें। मुलायम से अलगाव होने के बाद ऐसा लगता है कि वे राजनीति के हाशिये पर भी नहीं रहे। पर क्षत्रियों की पार्टी बनाने की बातें कर रहे हैं। यहां अगड़ों की, पिछड़ों की, दलितों की पार्टी तो बन सकती है, भला अकेले क्षत्रियों की पार्टी कैसे बनेगी? ऐसा लगता है कि 'ठाकुर' अमर सिंह क्षत्रियों की पार्टी बनाने के नाम पर एक दिवा-स्वप्न देख रहे हैं। अब उनके लिए एक ही काम बचा है जिसे वे बेहतर ढंग से कर सकते हैं। पहले राजनीति की दलाली किया करते थे, अब उन बॉलीवुड अभिनेत्रियों की दलाली करें जो अपने देह की कीमत लगाने को तैयार हों।

बिग बी और मोदी

मुंबई में एक सरकारी कार्यक्रम में अतिथि के रूप में अमिताभ के भाग लेने से कांग्रेसी मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण बड़े ही नाराज हैं। वे पूछ रहे हैं कि अमिताभ को इस कार्यक्रम में कैसे बुलाया गया। जबकि उस अवसर के फोटोग्राफ्स में देखने को मिलता है कि वे प्रसन्न मुद्रा में बिग बहू से गुफ्त-गू कर रहे हैं। जाहिर है, मेगा स्टार बिग बी इसे बड़ी शर्मिन्दगी महसूस कर रहे हैं। पिछले दिनों बिग बी की नजदीकियां गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी से काफी बढ़ गई थीं। वे अपनी फिल्म 'पा' के प्रचार के सिलसिले में गुजरात गये हुए थे। वहां मुख्यमंत्री मोदी के लिए उस फिल्म की स्पेशल स्क्रीनींग हुई। बिग बी ने मोदी से फिल्म को टैक्स-फ्री करने का आग्रह किया जो मोदी ने कर दिया। इससे बिग बी मोदी के बड़े प्रशंसक बन गये। उनके उद्योगपति मित्र अनिल अंबानी से मोदी की निकटता जगजाहिर है। पहले ये मुलायम के खेमे में थे। पर मुलायम से अमर के अलगाव के बाद अंबानी और अमिताभ उनके खेमे में नहीं हैं। अंबानी ने तो एयरटेल के मित्तल के साथ मोदी से भेंट कर यह कहा था कि प्रधानमंत्री पद के वे सुयोग्य पात्र हैं। अब बिग बी भी ऐसा ही कुछ समझते हैं। जो हो, मोदी के कहने पर अब बिग बी भाजपा के स्टार प्रचारक बन सकते हैं। आखिर मोदी ने उन्हें गुजरात का ब्रांड एंबेसडर बना दिया है।

गपशप

क्या उमा भारती भाजपा में शामिल होंगी?

सेक्सी संन्यासिन उमा भारती ने अपनी भारतीय जनशक्ति पार्टी के अध्यक्ष पद से इस्तीफ़ा दे दिया। उमा भारती जब से भाजपा से अलग हुईं और अपनी पार्टी बनायी, उन्हें कभी किसी तरह की सफ़लता नहीं मिली। प्रेमी गोविंदाचार्य से अलगाव हुआ वह अलग। उम्र की मार से सेक्सी भी नहीं रह पाईं।

अब किसी न किसी प्रकार संघ के चिर ब्रह्मचारियों को रिझाने में सफल हो पाई हैं। कहते हैं कि संघ ने भाजपा के नेतृत्व को यह निर्देश दिया है कि उमा को पार्टी में वापस ले लो। देखते हैं कि इस निर्देश को आडवाणी मानने को तैयार होते हैं या नहीं। वैसे गडकरी के अध्यक्ष बनने के पहले ही उमा भारती ने आडवाणी से काफ़ी चिरौरी की थी कि उन्हें पार्टी में ले लिया जाये, पर आडवाणी का दिल नहीं पसीजा। वे उन दिनों को भूल नहीं पाये जब उमा भारती ने उनके खिलाफ़ अभियान चलाया था। वैसे अब पार्टी अध्यक्ष तो गडकरी हैं, पर आडवाणी के खिलाफ़ वे जा नहीं सकते।

उमा भारती अपनी ही पार्टी के अध्यक्ष पद से इस्तीफ़ा देने के बाद गंगोत्री की यात्रा पर निकल गई हैं। उनके शुभचिंतकों का मानना है कि इस महीने उन्हें भाजपा में शामिल कर लिया जायेगा। वैसे कुछ शुभचिंतकों ने उन्हें यह भी सलाह दी है कि वे डाइटिंग आदि कर अपनी बॉडी को आकर्षक बना लें। यह उनके काफ़ी काम आयेगा।

बाबा रामदेव राजनीति में आएंगे

जी हां, यह सच है। बाबा ने यह घोषणा कर दी है कि वे राजनीति में आयेंगे और इसके लिए एक पार्टी का गठन करेंगे। बाबा रामदेव के पास देश के बड़े-बड़े पूंजीपतियों से कम पैसा नहीं है। योग का उद्योग चला कर उन्होंने काफ़ी पैसा बनाया है और कई टीवी चैनलों को खरीद लिया है। जब ये राजनीति में आयेंगे तो उनके चैनल दिन-रात उनका और उनके चेलों का प्रचार करेंगे।

बाबा टीवी की महिमा से ही आज इस मुकाम पर हैं, नहीं तो योगी तो इस देश में न जाने कितने हुए, पर बाबा की तरह लोकप्रिय नहीं हो सके और न ही पैसा बटोर सके। बाबा के योग की महिमा का पता तभी चला था जब इन्होंने फिल्मी तारिकाओं को योग का प्रशिक्षण देना शुरू किया था ताकि वे और भी सुडौल एवं सेक्सी दिख सकें और उनका बाज़ार भाव बढ़ सके।

उनकी प्रेरणा से शिल्पा शेट्टी ने तो अपने विशेष योग मुद्राओं की सीडी भी जारी कर दी थी जो बहुत बिकी। अब एक-दो अभिनेत्रियां भी अपनी सीडी जारी करने वाली हैं। बाबा की अनेकों सीडी तो दशकों से बाज़ार में बिक रही हैं। बाबा का कहना है कि वे राजनीति में शुद्धता लायेंगे और भ्रष्टाचार को राजनीति से उखाड़ फेंकेंगे। मुलायम और मायावती के बारे में इन्होंने कहा है कि ये पिछड़ों के नकली हमदर्द हैं। पिछड़ों के असली हमदर्द वे हैं और जब वे राजनीति में आयेंगे तो पिछड़ों का वास्तविक विकास होगा।

भूलना नहीं चाहिए कि बाबा स्वयं पिछड़ी जाति से आते हैं। बाबा यह सपना देख रहे हैं कि उनकी जो लोकप्रियता है, उसे देखते हुए प्रधानमंत्री बनने से उन्हें कोई रोक नहीं सकता। सचमुच, यह एक क्रांति होगी जब कोई भगवाधारी प्रधानमंत्री के सिंहासन पर बैठेगा। वैसे बाबा हिंदूवादी हैं और चाहते तो भाजपा में आसानी से शामिल हो सकते थे। पर बाबा अपने लिए सर्वोच्च स्थान चाहते हैं और भाजपा में यह स्थान लाख कोशिशों के बाद भी इन्हें नहीं मिलता। इसलिए अपनी पार्टी बनाने के सिवा इनके पास और कोई चारा नहीं है।

नगर निगम चुनाव : प्रचार कार्य तेज हुआ

फरीदाबाद (म.मो.) नगर निगम चुनाव होने में अब ज़्यादा दिन नहीं रह गये हैं। इसे देखते हुए पार्षद पद के उम्मीदवारों ने चुनाव प्रचार की गहमागहमी शुरू कर दी है। वैसे इस गहमागहमी के काफ़ी पहले ही उम्मीदवारों ने चुनाव प्रचार शुरू कर दिया था। यह प्रचार नगरवासियों को शुभकामनायें देने के रूप में शुरू हुआ था और अभी भी जारी है।

इस बार भी पहले की भांति ही कुछ वार्डों को महिलाओं के लिए आरक्षित कर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि अब पुरुष पार्षदों ने महिलाओं के लिए आरक्षित सीटों पर अपनी पत्नियों को चुनाव मैदान में धकेल दिया और उनके चुनाव प्रचार में लग गये। यह भी उन्होंने अति आवश्यक समझा कि लोगों को उनका परिचय भी दे दिया जाये कि ताकि मतदाताओं को उनकी राजनीतिक विरासत का ध्यान रहे। ऐसा न हो कि मतदाता कोई भूल कर सकें। पार्षद का पद घर में ही बना रहे, न कि महिला आरक्षण से घर से बाहर चला जाये। यहां खास बात यह है कि पार्षद पद यदि महिलाओं को मिलता भी है तो वे घर की चूल्हा-चौकी में ही व्यस्त रहेंगी, पार्षद पद की जिम्मेवारी संभालने के लिए उनके पति हर वक्त मौजूद रहेंगे। वैसे फ़िलहाल कुछ ऐसी भी महिलायें हैं जिन्हें प्रचार करने के लिए अपने पतियों अथवा घर के किसी अन्य वरिष्ठ सदस्यों का नाम लेना जरूरी नहीं है। उन्होंने जो छवि बनाई है, वह एक स्वतंत्र महिला के रूप में अपने दम पर बनाई है। लेकिन ज़्यादातर महिला उम्मीदवार ऐसी हैं जिन्हें अपने पतियों अथवा परिवार के अन्य सदस्यों के सहयोग की जरूरत है। देखा जाये तो अभी भी नगर निगम में ऐसी महिला पार्षदों की कोई कमी नहीं है जो इसी श्रेणी में आती हैं। वैसे महिलाओं को छोड़ भी दिया जाये तो ऐसे-ऐसे उम्मीदवार सामने आ रहे हैं जो किसी भी तरह पार्षद चुने जाने की योग्यता नहीं रखते। इनकी योग्यता सिर्फ इतनी ही है कि राज्य स्तर के किसी न किसी नेता के साथ चिपके हुए हैं और छुटभैये नेता की छवि बना रखी है। पार्षद बनने की लालसा इनकी जनसेवा के लिए नहीं, बल्कि 'स्वयंसेवा' के लिए है। वैसे भी देखा जाये तो आज तक शायद ही किसी पार्षद ने जनहित के लिए कुछ खास किया हो। कुछ अपवादों को छोड़ दिया जाये तो लगभग सभी अपने निहित स्वार्थों को पूरा करने में लगे रहे और परिस्थितियों को देखते हुए लगता है कि आगे भी सब अपनी 'पेट-पूजा' में लगे रहने वाले हैं। वैसे भी पार्षदों की हालत को देखते हुए नगर निगम पर नौकरशाही ही हावी है। नौकरशाही पार्षदों को कोई खास तवज्जो नहीं देती। नगर निगम अपने कर्त्तव्यों को निभा पाने में पूरी तरह से असफ़ल है।

सफाई का मामला हो या पीने के पानी का, निगम इन कामों को पूरा करने में जरा भी रुचि नहीं लेता। काग़ज़ों पर बड़ी-बड़ी योजनायें बनाई जाती हैं, पर उन योजनाओं को पैसे के अभाव में पूरा नहीं किया जाता। कहा जाता है कि नगर निगम के पास कर्मचारियों को वेतन तक देने के लिए पैसे नहीं रहते और कभी किसी फंड से तो कभी और किसी दूसरे फंड से वेतन दिया जाता है। अब इससे बुरी स्थिति क्या होगी? शहर के हर वार्ड में पीने के पानी की समस्या है। नगर निगम जिस पानी की सप्लाई करता है, वह किसी भी तरह पीने लायक नहीं है। मजबूर होकर लोगों को पानी खरीदना पड़ता है। जिनकी हैसियत पानी खरीदने की नहीं है, वे मजबूरी में निगम का गंदा पानी पीते हैं और फिर बीमार होकर सरकारी अस्पतालों में मरते-खपते हैं। कई कॉलोनियां तो ऐसी हैं जहां हफ्तों तक पानी आता ही नहीं।

वे लोग़ निजी टैंकरों से पानी खरीदने को मजबूर हैं। यही हाल सड़कों और सफाई व्यवस्था का है। जिन सड़कों का निर्माण किया जाता है, उनकी स्थिति साल भर में ही खराब हो जाती है। इन समस्याओं को पार्षद गण उठाते नहीं हैं और जब उठाते ही नहीं तो इन समस्याओं को दूर करने के लिए प्रयास करने की बात ही नहीं रह जाती। शहर के हर क्षेत्र में आवारा पशुओं के कारण लोगों की नाक में दम है। पर निगम कभी इस समस्या पर काबू नहीं पा सका। आखिर पार्षद गण जनप्रतिनिधियों के रूप में निगम में अपनी कौन-सी भूमिका निभाते हैं?

नगर निगम की स्थापना 1994 में हुई थी। उस समय लोगों को इससे काफ़ी उम्मीदें थीं। उस समय डॉ. हेमराज ढींगड़ा, श्री धर्मवीर त्यागी और कुछ अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति प्रथम सदन के सदस्य चुने गये थे। इन्होंने जनता की भलाई के लिए संघर्ष करते हुए जो काम कराये, उसके कारण आज भी इनकी पहचान बनी हुई है। इन्होंने प्रथम सदन के दौरान नगर निगम के कई घोटाले सामने लाये जैसे तालाब घोटाला, सीवर लाइन घोटाला, कैजुअल लेबर घोटाला आदि। पर इन घोटालों को लेकर कोई कार्रवाई नहीं हुई। डॉ. हेमराज ढींगड़ा ने दो नंबर के नाले पर पुल बनाने के लिए काफी संघर्ष किया, यहां तक कि वहीं अनशन पर भी बैठ गये और तब जा कर यह काम हुआ जिससे जनता को काफी सुविधा हुई। पर अब इस तरह के संघर्षशील पार्षद दिखाई नहीं पड़ते।

इस बार कई ऐसे पार्षद चुनाव मैदान में नहीं उतर रहे हैं जिन्होंने विधायक पद का चुनाव लड़ा था। ऐसे पार्षदों में मुख्य रूप से सीमा त्रिखा की कमी लोगों को खलेगी, क्योंकि वह एक संघर्षशील पार्षद थीं। इस बार भारतीय जनता पार्टी ने यह निर्णय लिया है कि उसके उम्मीदवार पार्टी के चुनाव चिह्न पर चुनाव लड़ेंगे। इससे कुछ खास फर्क नहीं पड़ता। कुल मिला कर इस चुनाव के प्रति लोगों में कुछ खास दिलचस्पी नहीं है, क्योंकि वे इस बात को समझ गये हैं कि नगर निगम चुनाव में कोई जीते, कोई हारे, शहर की समस्यायें यथावत ही रहनी हैं।